UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

JRF का जलवा

संस्कृत साहित्य, काव्यशास्त्र एवं छन्द का सामान्य परिचय

UNIT=7

Daily = 6 pm

Class = 72

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d purshuing

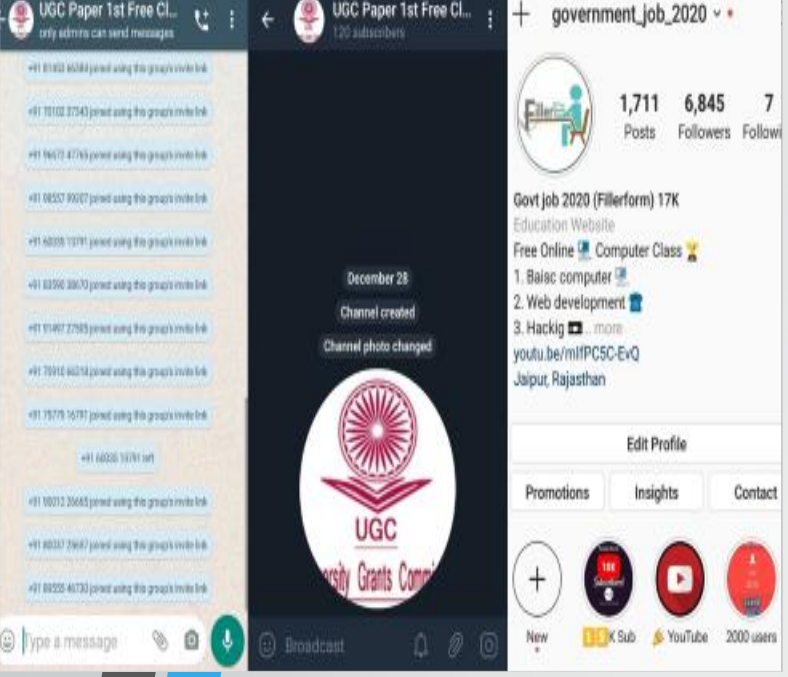

m

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast

government_job_2020
1,711 Posts
6,845 Followers
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
YouTube
2000 users

Filler Form
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
"Level of Teaching"
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
5000+MCQ+PYQ
Free Books
100% off
fillerform

NET Free Class
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
07:00 PM - Short video(notes)
08:00 PM- Job/PhD update
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

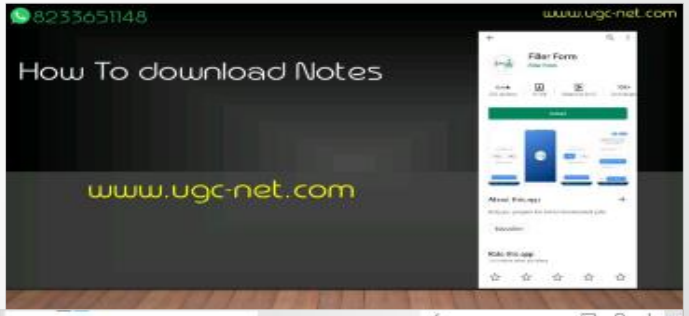

www.ugc-net.com
We want JRF
JRF का जलवा
We want JRF

UGC NET Giveaway
Win Books
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

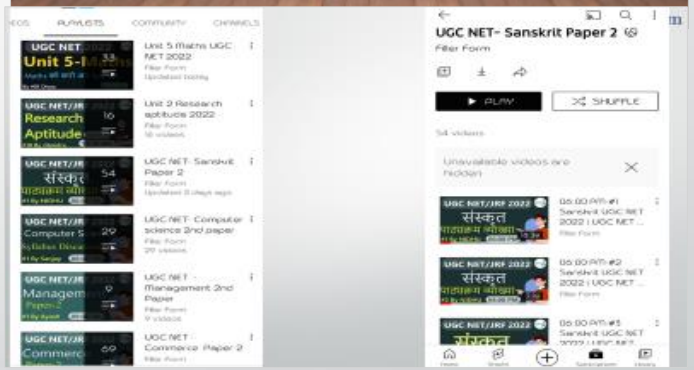

PLAYLISTS
UGC NET Research Aptitude
UGC NET Sanskrit Paper 2
UGC NET Computer science 2nd paper
UGC NET Commerce Paper 2

UGC NET- Sanskrit Paper 2
Filler Form
PLAY
SHUFFLE

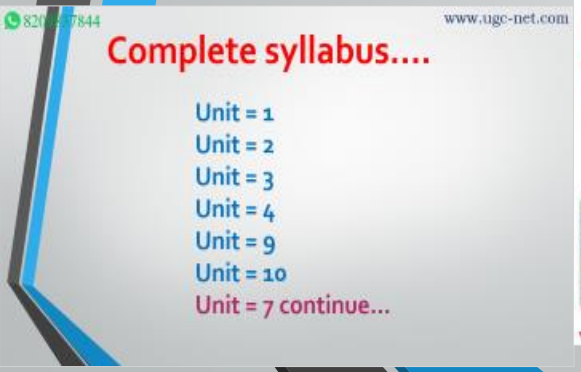

www.ugc-net.com
Complete syllabus....
Unit = 1
Unit = 2
Unit = 3
Unit = 4
Unit = 9
Unit = 10
Unit = 7 continue...

UGC NET Giveaway
MAY 8
Top 10th Student
Free Books
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC NET Giveaway
Free Books
MAY 1
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC NET Giveaway
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

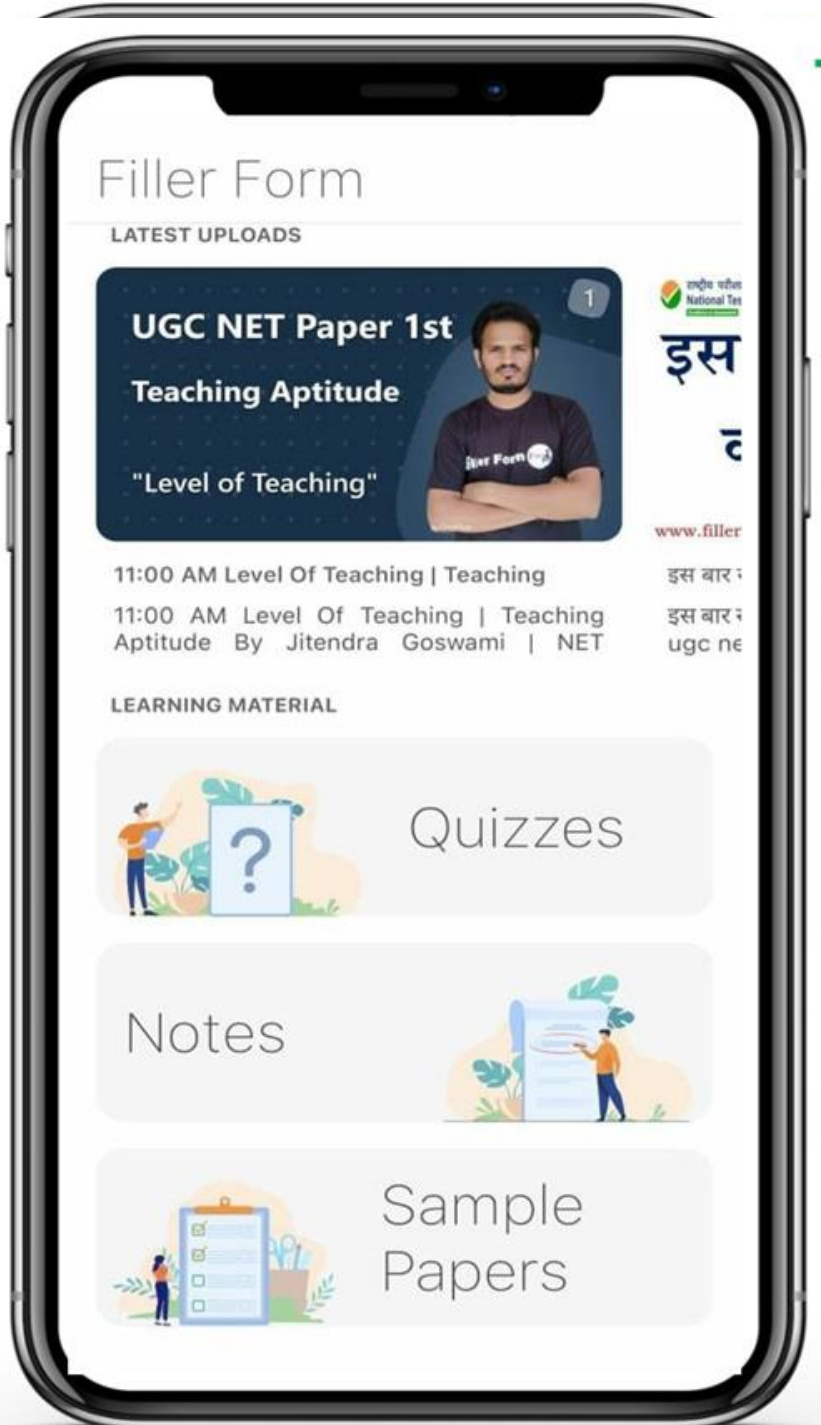

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

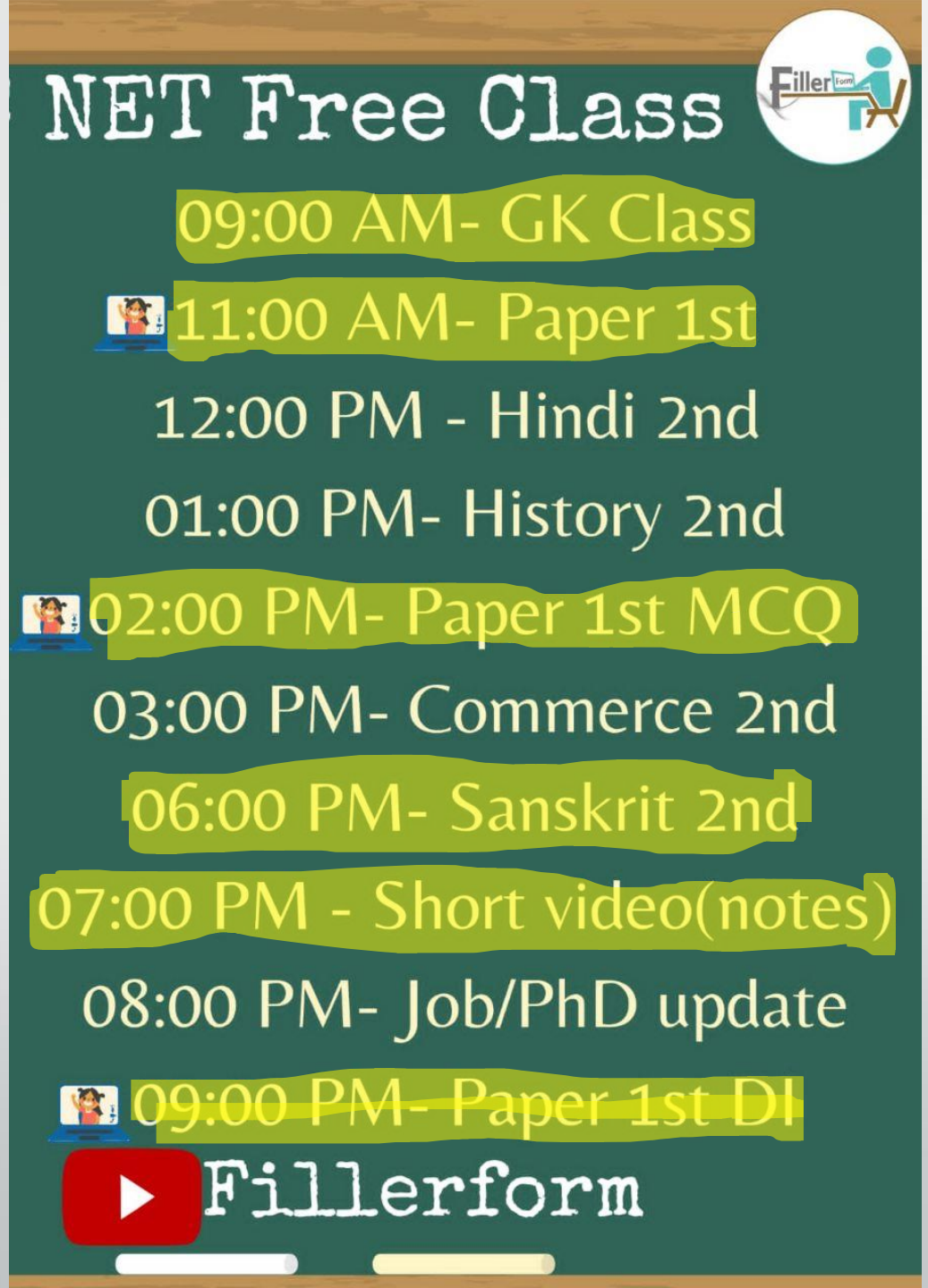

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

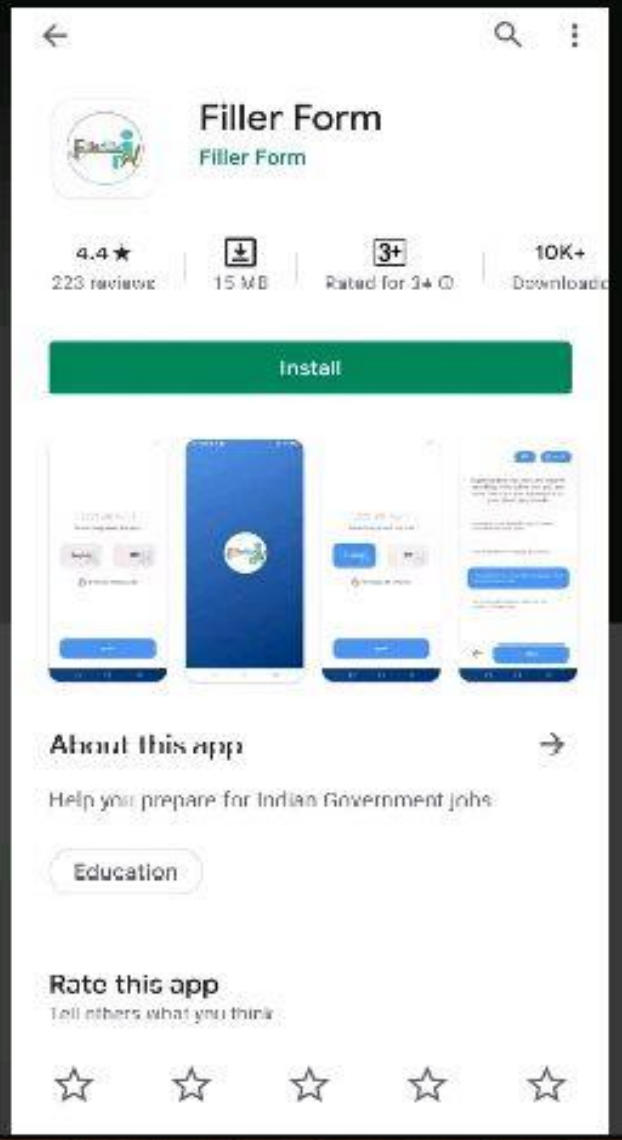

EOS PLAYLISTS COMMUNITY CHANNELS

Unit 5 Maths UGC NET 2022
Filler Form
Updated today

Unit 2 Research aptitude 2022
Filler Form
16 videos

UGC NET- Sanskrit Paper 2
Filler Form
Updated 2 days ago

UGC NET- Computer science 2nd paper
Filler Form
29 videos

UGC NET - Management 2nd Paper
Filler Form
9 videos

UGC NET - Commerce Paper 2
Filler Form

UGC NET- Sanskrit Paper 2

Filler Form

PLAY SHUFFLE

54 videos

Unavailable videos are hidden

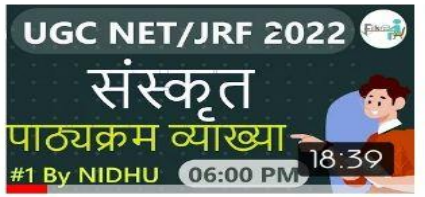

06:00 PM-#1 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET ...
Filler Form

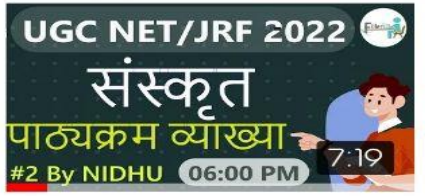

06:00 PM-#2 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET ...
Filler Form

06:00 PM-#3 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET

Home Shorts Subscriptions Library

UGC NET Giveaway

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

UGC NET Giveaway

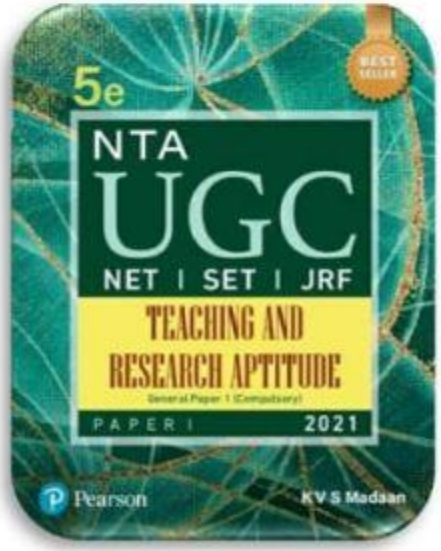

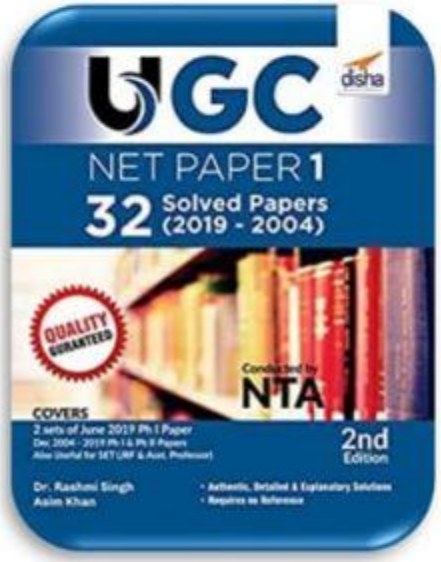

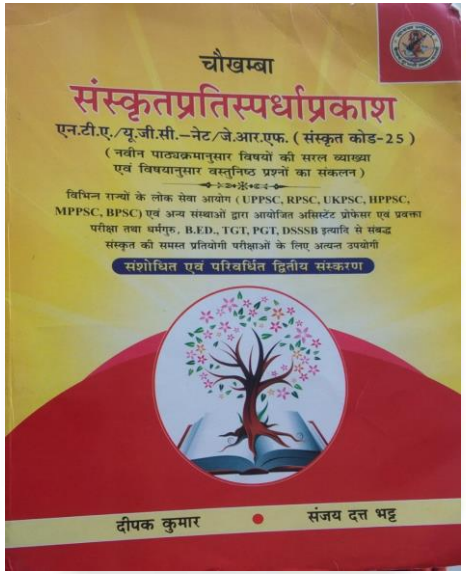

Win Books

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

UGC NET Giveaway

Free Books

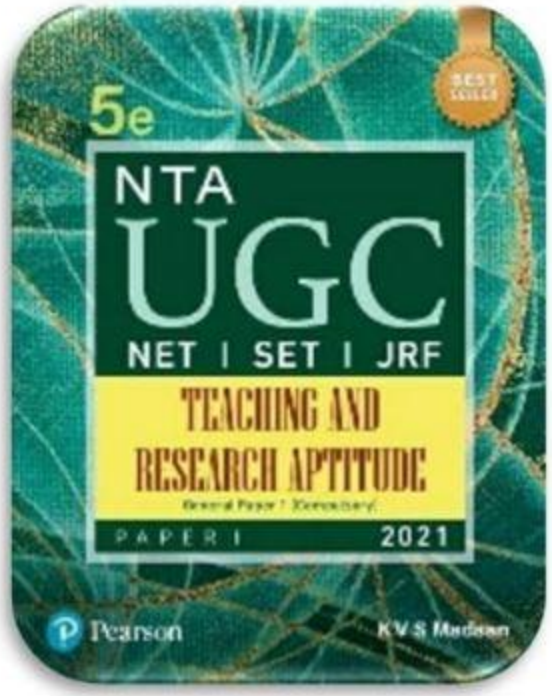

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

UGC NET Giveaway

Top 10th Student Free Books

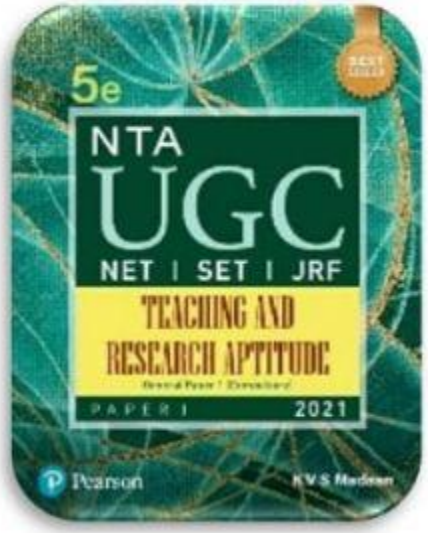

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

We want JRF

🎯 JRF का जलवा 🔥 🏆

We want JRF

8209837844

www.ugc-net.com

Complete syllabus....

Unit = 1

Unit = 2

Unit = 3

Unit = 4

Unit = 9

Unit = 10

Unit = 7 continue...

8209837844

www.ugc-net.com

इकाई-7

॥संस्कृतसाहित्य॥

संस्कृतसाहित्य काव्यशास्त्र एवं छन्द परिचय-

(क) प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय-

Today's Topic....

॥काव्यशास्त्र॥

8209837844

www.ugc-net.com

साहित्यशास्त्र के सम्प्रदाय-

(1) रससम्प्रदाय- भरतमुनि। (100 ई.पू. से 300 ई.पू.)

रचना- नाट्यशास्त्र (36 अध्याय)।

रस सिद्धान्त-

रस संप्रदाय के मुख्य आचार्य भरत मुनि हैं । रस के विषय में सर्वप्रथम विवेचन **"नाट्यशास्त्र"** में मिलता है । जिन्होंने नाट्यरस का ही मुख्यत: विश्लेषण किया और उस विवरण को अवान्तर आचार्यों ने काव्यरस के लिए भी प्रामाणिक माना। यह सबसे प्राचीन सम्प्रदाय है। भरतमुनि के रससिद्धान्त के व्याख्याकार के रूप में - **1. भट्टनायक, 2. भट्टलोल्लट, 3. शङ्कुक, 4. अभिनवगुप्त, 5. विश्वनाथ** ये पाँच आचार्य प्रसिद्ध हैं।

रस का प्रमुख सूत्र-

"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।" (ना.शा.)

यह प्रसिद्ध रससूत्र ही रससिद्धान्त का प्राणभूत है ।

रससम्प्रदाय के अन्य प्रमुख प्रवर्तकाचार्य-

"भोजराज, राजशेखर, केशवमिश्र, शारदातनय"।

8209837844

www.ugc-net.com

(2) अलङ्कारसम्प्रदाय- भामह (700ई.)

रचना- काव्यालंकार (भामहालंकार 6 परिच्छेद), 400 श्लोक।

अलङ्कार सिद्धान्त-

रस सम्प्रदाय के बाद इसका दूसरा स्थान है। अलंकार संप्रदाय के प्रमुख आचार्य भामह हैं। इसके अन्तर्गत **'भामह विवरण'** के निर्माता **'उद्भट'** और उनके बाद - **दण्डी, रुद्रट** आदि तथा पश्चाद्वर्ती - **प्रतिहारेन्दुराज, जयदेव, अप्पयदीक्षित** आदि अनेक आचार्य आते हैं।'अप्पयदीक्षित' की **'परिमल'** टीका सुप्रसिद्ध है। इस मत में अलंकारों को ही काव्य की आत्मा माना जाता है। इस शास्त्र के इतिहास में यही संप्रदाय प्राचीनतम तथा व्यापक प्रभावपूर्ण अंगीकृत किया जाता है। अलङ्कार सम्प्रदाय के

8209837844

www.ugc-net.com

अनुयायी भी रस की सत्ता मानते हैं किन्तु उसे प्रधनता नहीं देते हैं। इनके मत में काव्य का प्राणभूत जीवनाधायक तत्व अलङ्कार ही है। अलङ्कारविहीन काव्य की कल्पना उष्णविहीन अग्नि की कल्पना के सदृश है -

"अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलङ्कृती।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती।।"

(चन्द्रालोक-जयदेव)

अलङ्कारसम्प्रदायवादी, काव्य में अलङ्कारों को प्रधान मानते हैं और इसका अन्तर्भाव रसवदलङ्कारों में करते हैं।

8209837844

www.ugc-net.com

रसवदलङ्कार-

1. रसवत्, 2. प्रेय, 3. ऊर्जस्विन्, 4. समाहित।

ये चार प्रकार के रसवदलङ्कार माने जाते हैं। भामह और दण्डी दोनों ने इन रसवदलङ्कारों के भीतर ही इसका अन्तर्भाव किया है-

"रसवद्दर्शितस्पष्टश्रृंगारादिरसं यथा।" (भामह, काव्यालङ्कार 3.6)

"मधुरे रसवद्वापि वस्तुन्यपि रसस्थितिः।" (दण्डी, काव्यादर्श 3.51)

8209837844

www.ugc-net.com

3. रीतिसम्प्रदाय- वामन। (800 ई.)

रचना- काव्यालंकारसूत्रवृत्ति (5 अधिकरण)।

रीति सिद्धान्त-

रीति सम्प्रदाय आचार्य वामन (9वीं शती) द्वारा प्रवर्तित एक काव्य-सम्प्रदाय है जो रीति को काव्य की आत्मा मानता है। यद्यपि संस्कृत काव्यशास्त्र में 'रीति' एक व्यापक अर्थ धारण करने वाला शब्द है। लक्षणग्रंथों में प्रयुक्त 'रीति' शब्द का अर्थ ढंग, शैली, प्रकार, मार्ग तथा प्रणाली है। 'काव्य रीति' से अभिप्राय मोटे तौर पर काव्य रचना की शैली से है। रीतितत्व काव्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका शाब्दिक अर्थ प्रगति, पद्धति, प्रणाली या मार्ग है। परन्तु वर्तमान समय में 'शैली' (स्टाइल) के समानार्थी के रूप में यह अधिक समाहृत है। आचार्य वामन ने रीति सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा की है। उन्होंने **काव्यालंकारसूत्रवृत्ति** में 'रीति' को काव्य की आत्मा घोषित किया है। उनके अनुसार 'पदों की विशिष्ट रचना ही रीति है' (**विशिष्टपदरचना रीतिः**)। विशिष्ट शब्द को स्पष्ट करते हुये वे कहते हैं - **विशेषो गुणात्मा।**

8209837844 ugc-net.com

वामन ने गुण को विशेष महत्व दिया है। रीति काव्य की आत्मा है और गुण रीति के कारणभूत वैशिष्ट्य की आत्मा है। रीति शब्द और अर्थ के आश्रित रचना चमत्कार का नाम है जो माधुर्य, ओज और प्रसाद गुणों के द्वारा चित्र को द्रवित, दीप्त और परिव्याप्त करती हुयी रस दशा तक पहुँचाती है।

काव्य में रीति का विशेष महत्त्व है। रीति के अन्य परिभाषाकार कहते है कि काव्य में रीति पदों के संगठन से रस को प्रकाशित करने में सहायक होती है। इस प्रकार रीति का काव्य में वही स्थान है जो शरीर में आंगिक संगठन का है। जिस प्रकार अवयवों का उचित सन्निवेश शरीर के सौन्दर्य को बढाता है, शरीर को उपकृत करता है उसी प्रकार वर्णों का यथास्थान प्रयोग शब्द रूपी शरीर और अर्थ रूपी आत्मा के लिए विशेष उपकारक है।

8209837844

www.ugc-net.com

आचार्य वामन ने रीति के तीन भेद तय किये हैं– **वैदर्भी रीति, गौडी रीति, पाञ्चाली रीति।** आचार्य दण्डी केवल दो ही भेद मानते हैं, वे पाञ्चाली का समर्थन नहीं करते। दण्डी, 'रीति' के स्थान पर 'मार्ग' शब्द का प्रयोग करते हैं। परवर्ती आचार्यो ने रीति के तीन से भी अधिक भेद स्थापित किये हैं। लाट देश में प्रयुक्त होने वाली एक 'लाटी' रीति का प्रादुर्भाव हुआ। बाद में **'भोज'** ने **'मालवी'** और **'अवन्तिका'** नामक दो अन्य रीतियों का अविष्कार किया। आचार्य विश्वनाथ रीति को काव्य का उपकारक मानते हैं। 'वक्रोक्तिजीवित' के लेखक कुन्तक ने रीति का

82098378 … gc-net.com

खुलकर विरोध किया, आचार्य मम्मट उनके समर्थन में आये और रीति को वृत्तियों से जोड़ने की बात की। **'राजशेखर'** ने रीति को काव्य का **'बाह्य तत्व'** बताया। उनके अनुसार, – **'वाक्यविन्यासक्रमो रीतिः'**। किन्तु यह सब विरोध विद्वानों की आम सहमति नहीं पा सका और वामन के रीति सम्बन्धी विचारों को मान्यता मिली। **'रीतिरात्मा काव्यस्य'** यह इनका प्रमुख सिद्धान्त है।

वामन ने 10 गुणों का वर्णन किया है -

1. ओज,
2. प्रसाद,
3. श्लेष,
4. समता,
5. कान्ति
6. समाधि
7. माधुर्य,
8. सौकुमार्य
9. उदारता
10. अर्थव्यक्ति

8209837844

www.ugc-net.com

काव्यशोभायाः कर्तारो धर्माः गुणाः।

तदतिशयहेतवस्त्वलङ्काराः।। (वामन)

वामन ने इन दो सूत्रों को लिखकर गुण तथा अलङ्कारों का भेद प्रदर्शित करते हुए अलङ्कारों की अपेक्षा गुणों के विशेष महत्व को प्रदर्शित किया है। मम्मटादि आचार्यों ने रीति की उपयोगिता स्वीकार की है किन्तु इसे काव्य की आत्मा स्वीकार नहीं किया है। उनके अनुसार रीतियों की स्थिति वैसी है जैसे शरीर में आँख, कान, नाक आदि अवयवों की-

"रीतयोऽवयवसंस्थानविशेषवत्।" (मम्मट)

8209837844

www.ugc-net.com

4. ध्वनिसम्प्रदाय – आनन्दवर्धन। (850 ई0)

रचना- ध्वन्यालोक (4 उद्योत)।

ध्वनि सिद्धान्त-

ध्वनि सिद्धान्त, भारतीय काव्यशास्त्र का एक सम्प्रदाय है। भारतीय काव्यशास्त्र के विभिन्न सिद्धान्तों में यह सबसे प्रबल एवं महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। ध्वनि सिद्धान्त का आधार **'अर्थ ध्वनि'** को माना गया है। इस सिद्धान्त की स्थापना का श्रेय **'आनंदवर्धन'** को है किन्तु अन्य सम्प्रदायों की तरह ध्वनि सिद्धान्त का जन्म आनंदवर्धन से पूर्व हो चुका था। स्वयं आनन्दवर्धन ने अपने पूर्ववर्ती विद्वानों का मतोल्लेख करते हुए कहा हैं कि-

8209837844
www.ugc-net.com

"काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः"।

अर्थात् काव्य की आत्मा ध्वनि है ऐसा मेरे पूर्ववर्ती विद्वानों का भी मत हैं।आनंदवर्धन के पश्चात 'अभिनवगुप्त' ने 'ध्वन्यालोक' पर 'लोचन टीका' लिखकर ध्वनि सिद्धान्त का प्रबल समर्थन किया। आनन्दवर्धन और अभिनवगुप्त दोनों ने रस और ध्वनि का अटूट संबंध दिखाकर रस मत का ही समर्थन किया था। आन्नदवर्धन ने **'रस ध्वनि'** को सर्वश्रेष्ठ ध्वनि माना हैं जबकि **'अभिनवगुप्त'** रस-ध्वनि को **'ध्वनित'** या **'अभिव्यंजित'** मानते हैं। परवर्ती आचार्य मम्मट ने ध्वनि विरोधी मुकुल भट्ट, महिम भट्ट, कुन्तक आदि की युक्तियों का सतर्क खंडन कर ध्वनि सिद्धान्त को प्रबलित किया। उन्होंने व्यंजना को काव्य के लिए अपरिहार्य माना

8209837844

इसीलिए उन्हें **'ध्वनि प्रतिष्ठापक परमाचार्य'** कहा जाता है। ध्वनि सिद्धान्त का आधार स्फोटवाद सिद्धान्त है काव्यशास्त्र में ध्वनि का संबंध 'व्यंजना शक्ति'से है। **"काव्यास्यात्मा ध्वनिः।"** आनन्दवर्धन के अनुसार काव्य का आत्मा स्थानीय तत्व है - **प्रतीयमान।**

"प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्तु वाणीषु महाकवीनाम्।
यन्न प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु।"

(ध्वन्यालोक 1.4)

- इन सभी सम्प्रदायों में ध्वनि सम्प्रदाय सबसे प्रबल एवं महत्वपूर्ण है। 'ध्वनिप्रतिष्ठापक परमाचर्य' - **मम्मट**
- ध्वनि काव्य की आत्मा है –

"काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः"।

(ध्वन्यालोक 1-1)

8209837844

www.ugc-net.com

- ध्वनि के तीन प्रकार- **वस्तु, अलंकार, रस।**

"एवं वस्त्वलंकार रसभेदेन त्रिधाध्वनिः।"

ध्वनिकार के मतानुसार जहां पर वाच्य अपने स्वरूप को तथा वाचक शब्द अपने अर्थ को गौण बनाकर व्यङ्ग्य अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं उस काव्य विशेष को ध्वनि कहते हैं।

ध्वनिसम्प्रदाय के अन्य प्रमुख प्रवर्तकाचार्य-

रूय्यक, मम्मट, अभिनवगुप्त, जगन्नाथ, इत्यादि।

8209837844

ww.ugc-net.com

5. वक्रोक्तिसम्प्रदाय- कुन्तक। (10 वीं शती उत्तरार्द्ध)

रचना- वक्रोक्तिजीवितम् (4 उन्मेष)।

वक्रोक्ति सिद्धान्त-

वक्रोक्ति दो शब्दों 'वक्र' और 'उक्ति' की संधि से निर्मित शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ है- ऐसी उक्ति जो सामान्य से अलग हो। टेढा कथन अर्थात जिसमें लक्षणा शब्द शक्ति हो। भामह ने वक्रोक्ति को एक अलंकार माना था। उनके परवर्ती कुन्तक ने वक्रोक्ति को एक सम्पूर्ण सिद्धान्त के रूप में विकसित कर काव्य के समस्त अंगों को इसमें समाविष्ट कर लिया। इसलिए कुन्तक को वक्रोक्ति संप्रदाय का प्रवर्तक आचार्य माना जाता है।

ऐतिहासिक विकास-

वक्रोक्ति सिद्धान्त की प्रतिष्ठा तथा प्रतिपादन का श्रेय कुन्तक को है परन्तु इसकी परम्परा प्राचीन है। भामह के पूर्ववर्ती कवियों बाण, सुबन्धु आदि में इसके संदर्भ प्राप्त होते हैं।

8209837844

www.ugc-net.com

भामह- भामह ने वक्रोक्ति का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया है। उन्होंने वक्रोक्ति में शब्द और अर्थ, दोनों का अंतर्भाव माना है। उन्होंने वक्रोक्ति तथा अतिशयोक्ति का समान अर्थ में प्रयोग किया है। अतिशयोक्ति का अर्थ है लोकातिक्रांत गोचरता। वक्रोक्ति को इसी कारण भामह मूल अलंकार मानते हैं। इसके बिना वाक्य काव्य न रहकर वार्ता मात्र रह जाता है।

8209837844

www.ugc-net.com

दण्डी- दंडी ने भी वक्रोक्ति को भामह के समान महत्व दिया है। दंडी ने वांङमय के दो भेद बताये हैं- स्वाभावोक्ति तथा वक्रोक्ति। दंडी ने वक्रोक्ति तथा अतिशयोक्ति को समस्त अलंकारों के मूल में स्वीकार किया है। भामह और दंडी में केवल यह अंतर है कि भामह स्भावोक्ति को वक्रोक्ति की परिधि में स्वीकार करते हैं और दंडी उसे भिन्न मानते हुए वक्र कथन से कम महत्वपूर्ण समझते हैं।

8209837844

www.ugc-net.com

आनन्दवर्धन- आनन्दवर्धन ने वक्रोक्ति की स्वतंत्र व्याख्या नहीं की है। उन्होंने इसे विशिष्ट अलंकार मानकर इसके सामान्य तथा व्यापक रूप को स्वीकार किया है। आनन्दवर्धन ने भामह के वक्रोक्ति संबंधी महत्व को स्वीकार करते हुए अतिशयोक्ति तथा वक्रोक्ति को पर्याय माना और सभी अलंकारों को अतिशयोक्ति गर्भित स्वीकार किया है।

अभिनवगुप्त- अभिनवगुप्त ने वक्रोक्ति के सामान्य रूप को स्वीकार किया है। इनके अनुसार शब्द और अर्थ की वक्रता का आशय उनकी लोकोत्तर स्थिति है तथा इस लोकोत्तर का अर्थ अतिशय ही है।

82098378

gc-net.com

कुन्तक- वक्रोक्ति सिद्धांत के प्रवर्तक कुंतक ने अपने ग्रंथ **वक्रोक्तिजीवितम्** में वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा कहा है। उन्होंने वक्रोक्ति के अंतर्गत सभी काव्य सिद्धांतों का समाहार करते हुए समस्त काव्यांगों- वर्ण चमत्कार, शब्द सौंदर्य, विषयवस्तु की रमणीयता, अप्रस्तुत-विधान, प्रबंध कल्पना आदि को उचित स्थान दिया है। कुंतक के अनुसार वक्रोक्ति केवल वाक्-चातुर्य अथवा उक्ति चमत्कार नहीं है, वह कवि व्यापार अथवा कवि कौशल है। कुंतक, अलंकारशास्त्र के एक मौलिक विचारक विद्वान थे। ये **'अभिधावादी'** आचार्य थे जिनकी दृष्टि में अभिधा शक्ति ही कवि के अभीष्ट अर्थ के द्योतन के लिए सर्वथा समर्थ होती है। इनका काल निश्चित रूप से ज्ञात नहीं हैं। किंतु विभिन्न अलंकार ग्रंथों के अंत:साक्ष्य के आधार पर समझा जाता है कि ये दसवीं शती ई. के आसपास हुए होंगे।

8209837844 www.ugc-net.com

कुन्तक अभिधा की सर्वातिशायिनी सत्ता स्वीकार करने वाले आचार्य थे। परंतु यह अभिधा संकीर्ण आद्या शब्दवृत्ति नहीं है। अभिधा के व्यापक क्षेत्र के भीतर लक्षणा और व्यंजना का भी अंतर्भाव पूर्ण रूप से हो जाता है। वाचक शब्द द्योतक तथा व्यंजक उभय प्रकार के शब्दों का उपलक्षण है। दोनों में समान धर्म अर्थप्रतीतिकारिता है। इसी प्रकार प्रत्येयत्व (ज्ञेयत्व) धर्म के सादृश्य से द्योत्य और व्यंग्य अर्थ भी उपचारदृष्ट्या वाच्य कहे जा सकते हैं।

उनकी एकमात्र रचना 'वक्रोक्तिजीवित' है जो अधूरी ही उपलब्ध हैं। वक्रोक्ति को वे काव्य का **'जीवित'** (जीवन, प्राण) मानते हैं। वक्रोक्तिजीवित में वक्रोक्ति को ही काव्य की आत्मा माना गया है जिसका और आचार्यों ने खंडन किया है। पूरे ग्रंथ में वक्रोक्ति के स्वरूप तथा

8209837844 www.ugc-net.com

प्रकार का बड़ा ही प्रौढ़ तथा पांडित्यपूर्ण विवेचन है। वक्रोक्ति का अर्थ है **वक्रोक्तिरेव वैदग्ध्यभंगीभणितिरुच्यते। (वक्रोक्तिजीवित 1.10)** कविकर्म की कुशलता का नाम है वैदग्ध्य या विदग्धता। भंगी का अर्थ है - विच्छित, चमत्कार या चारुता। भणिति से तात्पर्य है - कथन प्रकार। इस प्रकार वक्रोक्ति का अभिप्राय है कविकर्म की कुशलता से उत्पन्न होनेवाले चमत्कार के ऊपर आश्रित रहनेवाला कथनप्रकार। कुंतक का सर्वाधिक आग्रह कविकौशल या कविव्यापार पर है अर्थात् इनकी दृष्टि में काव्य कवि के प्रतिभाव्यापार का सद्य:प्रसूत फल हैं। काव्य में वक्रोक्ति का मूल्य 'भामह' ने भी स्वीकार किया है-

8209827844 www.ugc-net.com

"सैषा सर्वत्र वक्रोक्तिरनथार्यो विभाव्यते।
यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोऽलङ्कारोनयाविना।।"

(भामह काव्यालङ्कार 2.5)

दण्डी -"भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयम्"

(काव्यादर्श 2-363)

वामन - "सादृश्याल्लक्षणा वक्रोक्तिः।" (काव्यालङ्कारसूत्र 4-3-8,)

कुन्तक ने वक्रोक्ति सिद्धान्त पर वक्रोक्तिजीवित नामक ग्रन्थ लिखा। कुन्तक ने वामन के **'रीति'** के स्थान पर **'मार्ग'** शब्द का प्रयोग किया है। वामन की **'वैदर्भी'** रीति को कुन्तक 'सुकुमारमार्ग' कहते हैं। **'गौड़ी'** -'विचित्रमार्ग' **'पाञ्चाली'** -'मध्यममार्ग' ।

82098378

gc-net.com

6. औचित्य सम्प्रदाय- क्षेमेन्द्र। (11वीं शती)

रचना- औचित्यविचारचर्चा।

औचित्य सिद्धान्त-

औचित्य संप्रदाय के प्रतिष्ठाता क्षेमेन्द्र (11वीं शताब्दी का मध्यकाल) ने भरत, आनन्दवर्धन आदि प्राचीन आचार्यों के मत को ग्रहण कर काव्य में औचित्य तत्व को प्रमुख तत्व अंगीकार किया तथा इसे स्वतंत्र संप्रदाय के रूप में प्रतिष्ठित किया। अलंकारशास्त्र इस प्रकार लगभग दो सहस्त्र वर्षों से काव्यतत्वों की समीक्षा करता आ रहा है।

औचित्य - "उचितं प्राहुराचार्याः सदृशं किल यस्य यत्।
उचितस्य च यो भावस्तदौचित्यं प्रचक्षते।।"

8209837844 www.ugc-net.com

अनौचित्य रसभङ्ग का कारण तथा औचित्य इसका परम रहस्य -

"अनौचित्यहते नान्यद् रसभङ्गस्य कारणम्।
प्रसिद्धौचित्यबन्धस्तु रसस्योपनिषत्परा।।"

क्षेमेन्द्र के उपलब्ध ग्रन्थों में "औचित्यविचारचर्चा" का ही अलङ्कारशास्त्र के साथ विशेषरूप से सम्बन्ध माना जा सकता है। इसी कारण उनकी गणना आलङ्कारिक आचार्यों में की जाती है। उन्होंने औचित्य को रस का भी प्राण कहा है-

"औचित्यस्य चमत्कारकारिणश्चारुचर्वणे।
रसजीवितभूतस्य विचारं कुरुतेऽधुना।।"

Next class....

पाश्चात्य काव्यशास्त्र -

8209837844

www.ugc-net.com

Home work ....

Hend Writing Notes Send me On Telegram Group...

This Group.. = SANSKRIT BY NIDHU

This link..= https://t.me/+TfoY7528c8UoMmFl

Wapp number=8209837844

WE WANT YOUR
FEEDBACK

LIKE
& SHARE

FEEDBACK

For More Information….

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

//Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

thank
you